

इस अंक में...

- 7 | सम्पादकीय
- 9 | समसामयिकी घटना संग्रह
- 10 | समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ
- 19 | आर्थिक घटना संग्रह

- आरबीआई की रेपो दर में 35 बेसिस पॉइंट्स कटौती, जीडीपी 6.9 प्रतिशत संभावित
- जियो देश की सबसे बड़ी टेलीकॉम कम्पनी
- पाकिस्तान ने भारत से द्विपक्षीय व्यापार निलम्बित किए
- एक राष्ट्र एक राशन कार्ड योजना

23 | राष्ट्रीय घटना संग्रह

- प्रधानमंत्री मोदी ने स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्र को सम्बोधित किया
- केन्द्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 समाप्त किया
- भारत की सबसे लम्बी विद्युतीकृत रेल सुरंग

28 | अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह



- प्रधानमंत्री मोदी ने भूटान में लॉन्च किया रूपे कार्ड, 10 समझौतों पर हस्ताक्षर
- ब्रिक्स देशों के पर्यावरण मंत्रियों की 5वीं बैठक, 2019
- दुनिया की एक-चौथाई जनसंख्या जल संकट में
- जी-7 में कश्मीर मुद्दे पर नहीं हुआ कोई जिज़्र

31 | खेल खिलाड़ी

- खेलो इंडिया यूथ गेम्स, 2020
- विश्व की उच्चतम भुगतान पाने वाली महिला एथलीट
- विराट कोहली एक दशक में 20,000 रन बनाने वाले दुनिया के पहले क्रिकेटर
- रोहित शर्मा अन्तर्राष्ट्रीय टी-20 क्रिकेट में सर्वाधिक छक्के लगाने वाले क्रिकेटर



- पी.वी. सिंधु विश्व बैडमिंटन चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय

35 | महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह

लेख

- 38 | सामाजिक लेख—बन्धुत्व एवं सद्भावना
- 39 | वैज्ञानिक लेख—विज्ञान की पढ़ाई के उन्नयन हेतु सरकार द्वारा उठाए गए कदम
- 41 | कृषि लेख—व्यावसायिक खेती से किसानों की आर्थिक सुदृढ़ता
- 77 | प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता
- 78 | तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक-114 का परिणाम
- 79 | उत्तर प्रदेश मंत्रिमण्डल
- 81 | रोजगार अवसर

हल प्रश्न-पत्र

- 42 | उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग विधान भवन रक्षक/वनरक्षक (सामान्य चयन) प्रतियोगिता परीक्षा, 2016
- 53 | उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2018
- 63 | छत्तीसगढ़ पटवारी प्रशिक्षण चयन परीक्षा, 2019
- 73 | कोर्स ऑन कम्प्यूटर कॉन्सेप्ट्स (CCC) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे-इलेक्ट्रॉनिक, मेकैनीकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टोर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी 'सबसेस मिरर' की नहीं है.

- सम्पादक : महेन्द्र जैन
- रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा-2
- सम्पादकीय ऑफिस
1, स्टेट बैंक कॉलोनी, वन चेतना केन्द्र के सामने
आगरा-मथुरा बाईपास, आगरा-282 005
फोन- 4053333, 2531101, 2530966
फैक्स- (0562) 4053330
ई-मेल: सम्पादकीय: publisher@pdgroup.in
- दिल्ली ऑफिस
4845, अंसारो रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110 002
फोन- 011-23251844, 43259035
- पटना ऑफिस
पारस भवन (प्रथम तल),
खजांची रोड,
पटना- 800 004
फोन- 0612-2303340
मो- 09334137572
- कोलकाता ऑफिस
H-3, ब्लॉक-B, म्यूनिसिपल प्रीमिसेस No.
15/2, गालिक स्ट्रीट, पी.एस. श्यामपुकर,
कोलकाता- 700 003 (W.B.)
फोन- 033-25551510
- हल्द्वानी ऑफिस
8-310/1, ए. के. हाउस
क्षीरानगर, हल्द्वानी,
जिला-नैनीताल- 263 139
(उत्तराखण्ड)
मो- 07060421008
- हैदराबाद ऑफिस
16-11-23/37, मूसारामबाग, टीगन गुडा
आर.टी.ए. ऑफिस के सामने मेन रोड
(आन्ध्र बैंक के बगल में), हैदराबाद-500 036
(तेलंगाना) फोन- 040-24557283
- लखनऊ ऑफिस
B-33, ब्लॉक स्ववायर, कानपुर
टैक्सी स्टैण्ड लेन, मवईया,
लखनऊ- 226 004
फोन- 0522-4109080
मो- 09760181118
- नागपुर ऑफिस
1461, जूनी शुक्रवारी,
सक्करदरा रोड, हनुमान
मन्दिर के सामने,
नागपुर-440 009 (महाराष्ट्र)
मो- 09370877776
- इन्दौर
30-31, जिन्सी हाट मैदान,
बाबा रामदेव मंदिर के निकट
मलहारगंज
इन्दौर- 452 002 (म.प्र.)
फोन- 9203908088
- कस्टमर केयर: care@pdgroup.in



प्रकृति पर विजय पाइए और सुखी रहिए

वासन्ती वन की एक लहर मानव को नैतिकता, पाप और पुण्य के बारे में समस्त सन्तों से अधिक ज्ञान करा देगी.

— वर्डस्वर्थ

हम प्रकृति के दोनों रूपों अन्तः एवं बाह्य के मध्य जीवित रहते हैं और दोनों द्वारा परिचालित रहते हैं। ध्यातव्य यह है कि दोनों को अपने अनुकूल बनाकर ही हम उपयोगी जीवन जीने में समर्थ होते हैं।

प्रकृति के दोनों रूपों के सन्दर्भ में यह अटल नियम लागू होता है कि उसकी आज्ञा मानकर ही हम उस पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। इस तथ्य को भगवान बुद्ध ने इस प्रकार व्यक्त किया है—प्रकृति की आज्ञा मानकर हम उसका नेतृत्व करते हैं। विचारक फ्रांसिस बेकन के शब्दों में, *Nature is not governed, except by obeying her.*

एक नदी के ऊपर पुल बनाया जाना है। बहती हुई नदी को बाँधना असम्भव है और समान रूप से असम्भव है उस पर पुल बनाना। चतुर अभियन्ता उसके बहने के लिए एक अतिरिक्त मार्ग का निर्माण कर देता है। नदी का पेटा सूख जाता है और पुल तैयार कर दिया जाता है। नदी के बहाव को स्वीकार करके हम उसकी आज्ञा मानते हैं और पुल बनाकर उस पर विजय प्राप्त करते हैं।

यही नियम अन्तः प्रकृति के सन्दर्भ में भी लागू होता है। संसार के प्रति विरक्त होने के लिए महापुरुष हमें प्रेमभाव के दमन अथवा उसके स्थान पर घृणा या द्वेष के भाव को पालने का उपदेश नहीं देते हैं। उनका परामर्श है कि अपने मोह, रति भाव, लगाव अथवा प्रेम भाव को उस आलम्बन के प्रति लगाओ जो अनन्त सौन्दर्य, अनन्त शक्ति एवं अनन्तशील से युक्त है। ऐसे आलम्बन के सम्मुख होने पर आश्रय का ध्यान अन्य आलम्बन के प्रति आकर्षित नहीं होता है। बड़े वृक्ष की छाया में छोटे-छोटे पौधे पनप नहीं पाते हैं। नष्ट हो जाते हैं, वही स्थिति प्रेम के आलम्बन के सन्दर्भ में समझ लेनी चाहिए। इसको उन्नयन (*sublimation*) की प्रक्रिया कहा जाता है। भक्त जन इसी प्रक्रिया को अपनाते हुए पक्के भक्त बनते हैं—यहाँ तक कि आलम्बन के सानिध्य एवं दर्शन द्वारा प्राप्त आत्म-सन्तोष के सम्मुख उन्हें वैकुण्ठ का वास अथवा मोक्ष का सुख भी तुच्छ एवं

नगण्य प्रतीत होने लगता है। आधुनिक मनोविज्ञान-मनीषी भी मनोवेगों के दमन पर नहीं, अपितु उनके उन्नयन पर बल देते हैं। प्रसिद्ध मनोविश्लेषण-शास्त्री सिगमंड फ्रायड ने पूरा जोर देकर कहा है कि काम-वासना का अत्यधिक दमन इंजन के बायलर में भरी हुई भाप के समान विध्वंसकारी एवं विनाशकारी हो सकता है, क्योंकि भाप को बाहर निकलने का मार्ग न मिलने पर बायलर फट जाता है। काम के मनोवेग का अत्यधिक दमन विक्षिप्तता के अतिरिक्त अन्य रोगों को भी जन्म दे सकता है। विवाह की संस्था वस्तुतः काम के उन्नयन हेतु ही खड़ी की गई थी। इस प्रकार प्रकृति द्वारा प्रदत्त काम मनोवेग की आज्ञा का पालन करते हुए हम उस पर विजय भी प्राप्त कर लेते हैं।

क्रोध, घृणा आदि दुःखदायी मनोवेगों के उन्नयन के संदर्भ में कहा गया है कि इनका प्रयोग दुष्टों, दुष्टता एवं अपने अवगुणों के प्रति करना चाहिए। इससे आत्म-दोषों का प्रक्षालन भी हो जाता है और उनके सुखद परिणाम भी प्राप्त कर लिए जाते हैं।

बाह्य-प्रकृति हमारा उपकार अनेक प्रकार से करती है। वह हमें भौतिक एवं मानसिक पोषण प्रदान करती है। उसका गुणगान आदिकाल में आदिमानव ने किया था और उसका गुणगान आधुनिक मानव भी जी खोलकर करता है।